2019 JANUARY WK 03 | DAY 016-349 WEDNESDAY 16

सृजनशीलता का आधार
Basis of Creativity

J.P. गिलफोर्ड के अनुसार — " सर्जनात्मक का आधार चिंतन है। चिंतन और सृजन के संबन्ध में सर्वप्रथम विचार गिलफोर्ड ने विचार किया।
गिलफोर्ड के अनुसार सृजनात्मकता के अन्तर्गत 5 मानसिक व्यवहारों को रखा है —

1 — संज्ञान (Congnition) — मानसिक योग्यता
2. स्मृति (Memory)
3 — अपसारी चिंतन (Divergent Thinking) — सृजनात्मकता
4 — अभिसारी चिंतन (Convergent Thinking) (बुद्धि से सम्बन्धित)
5 — मूल्यांकन (Evaluation)

③ **अपसारी चिंतन का अर्थ** ! — जब किसी बालक को चिन्तन के अनेक विकल्प और विचारों को अलग-2 दिशाओं में फैलाने का अवसर दिया जाता है तो इसे अपसारी चिंतन कहते है। जैसे — "Out of the box Thinking" Exp — भारत की वर्तमान शिक्षा का उल्लेख कीजिए।

④ **अभिसारी चिंतन का अर्थ** ! यह केवल एक ही बिन्दु पर आधारित होता है उसे अभिसारी चिंतन कहलाता है इसमें अधिक विकल्पों और विचारों के फैलाव का स्थान नहीं होता है। Exp = ताजमहल कहा है? Ans. एक होगा आगरा।

Life outside the Box
Convergent VS Divergent thinking

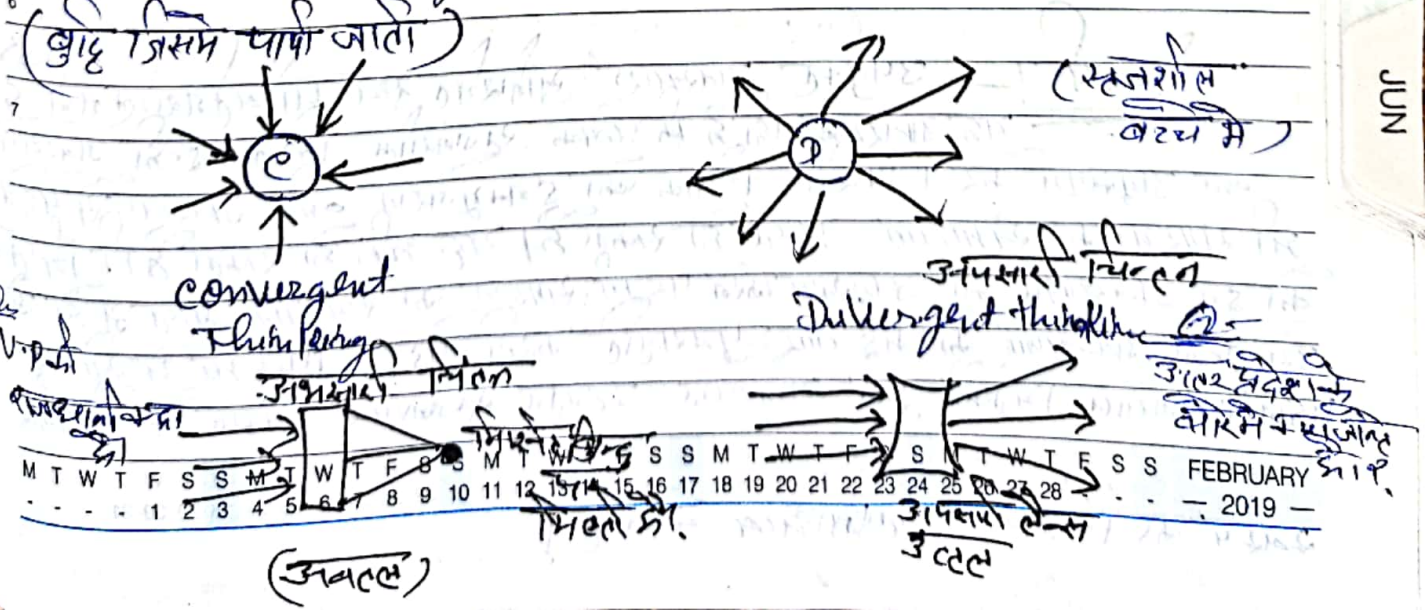

Q. V.P. की राजधानी क्या है — अभिसारी चिंतन — मिलते जुलते — मिलते है। (अवतल)

Q — उत्तर प्रदेश के बारे में बताओ। — अपसारी लेन्स उत्तल

M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S FEBRUARY 2019
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28

सृजनात्मक की प्रक्रिया (मन के अनुसार)

1 - तैयारी (2) उद्भवन (Incubation) (3) प्रेरणा / सहजबोध / प्रकाशित होना (Inspiration or Illumination) (4) जाँच पड़ताल या पुनरावृत्ति (Verification or Revision)

(3) प्रेरणा / सहजबोध / प्रकाशित होना
inspiration or Illumination
(उद्भासन)

इस अवस्था में चिन्तक अचानक समस्या के समाधान अनुभव करता है। इस अंतर्दृष्टि द्वारा समाधान की झलक मिलती है। इस प्रकार का बोध कभी भी हो सकता। कभी-2 तो चिंतक स्वप्न में भी समाधान का रास्ता देख लेता है।

(4) मूल्यांकन

इस अवस्था में चिंतक जो समाधान का रास्ता दिखाई दिया उसका मूल्यांकन करना होता है।

(5) जाँच पड़ताल / पुनरावर्तन

इस अवस्था में प्रेरणा / सहजबोध / प्रकाशित होना के द्वारा जो समाधान मिलता है अगर वह जाँच में सही पाया जाता है तो कोई परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है तथा अगर वह समाधान ठीक नहीं है तो चिंतक उस में परिवर्तन करता है।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त अवस्थाएँ सुनिश्चित एवं परिवर्तनशील नहीं हैं। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक सृजनशील चिंतक इन्हीं अवस्थाओं का अनुसरण करे। किसी चिंतक को इनक्यूबेशन की अवस्था से पहले भी समस्या का समाधान प्राप्त हो सकता है। यह भी हो सकता है कि चिंतक को इन अवस्थाओं का अनुसरण करने पर भी समस्या का समाधान प्राप्त न हो और उसे इन्हीं अवस्थाओं की कई बार पुनरावृत्ति करनी पड़े। फिर भी ये सोपान महान सृजनशील चिंतकों द्वारा अभिव्यक्त उत्तम सृजनात्मक प्रक्रिया के वास्तविक स्वरूप का निश्चित प्रतिनिधित्व करते हैं।

Scanned with CamScanner

सृजनात्मकता के प्रमुख सिद्धान्त

1. सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त।
2. सृजनात्मकता का जन्मजात सिद्धान्त।
3. सृजनात्मकता का वातावरणजन्य सिद्धान्त।
4. प्रमस्तिष्क का गोलार्द्ध का सिद्धान्त।
5. स्वप्रेरणा का सिद्धान्त।
6. मनोविश्लेषण सिद्धान्त।
7. अस्तित्ववाद का सिद्धान्त।
8. अन्तःदृष्टि का सिद्धान्त / पूर्णाकार / अन्तर्दृष्टिवाद (Gestalt Theory)
9. सृजनात्मकता स्तर का सिद्धान्त
10. साहचर्यवाद (Associationism)
11. अन्तवैयक्तिकवाद (Interpersonalism)
12. संकुलवाद (Trait Theory)

(1) सृजनात्मकता का प्राचीन सिद्धान्त

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psychoanalytic Theory)

फ्रायड ने कलात्मक सर्जनात्मकता में मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की। फ्रायड ने लियोनार्डो डा विन्सी कार्य तथा अन्य लेखकों का अध्ययन किया तथा उदात्तीकरण की अवधारणा का विकास किया। फ्रायड मानता है कि जीवन की कठिनाइयों के साथ अनुकूलीकरण के लिये तीन बातें आवश्यक हैं —

(i) रुचि का सशक्त विचलन जो कपट की चिन्ता कम करे।
(ii) परितुष्टि हेतु प्रतिस्थापितकरण
(iii) उत्तेजनात्मक उपादान (Intoxicating Substances) सर्जनात्मक स्थानापन्नता में देखी गई है।

फ्रायड के अनुसार — सृजनात्मक व्यक्ति यथार्थ से हट जाते हैं, क्योंकि मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार की आवश्यकता को सन्तुष्ट नहीं कर पाता। वह सर्जनात्मक क्रियाओं द्वारा अपनी प्रबल आकांक्षा तथा इच्छाओं को सन्तुष्ट कर सकता है। यही कारण है कि उदात्तीकरण ने उच्च मानसिक स्थिति में अचेतन मन की भूमिका को सृजनात्मक कार्य में अस्वीकार किया है। पूर्व चेतना प्रणाली सृजनात्मकता का आवश्यक तत्व है। जब तक पूर्व चेतना विकसित नहीं होगी, सर्जनात्मकता विकसित नहीं होगी।

साहचर्यवाद (Associationism) —

सर्जनात्मकता को साहचर्य के साथ जोड़ने का कार्य पहले पहल रिबोट (Ribot 1960) ने किया था। उसका विचार है कि साहचर्य वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानसिक स्थिति इस प्रकार जुड़ जाती है, जिससे वह जागृत (Evoke) होती है। साहचर्यवाद चिन्तन की योग्यता तथा उत्पादकता के संयोगों द्वारा उपयोगों पर विचार करता है। सर्जनात्मकता इन संयोगों का पुनर्गठन है।

मेडनिक ने सृजनात्मक चिन्तन तथा साहचर्य की व्याख्या करते हुए कहा है — "हम सर्जनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया को नवीन संगठन

Scanned with CamScanner

साहचर्य तत्वों की रचना से जोड़ते है, वे किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति करते है नवीन संगठन के तत्वों में जितनी घनिष्ठता होगी उतनी सघन सर्जनात्मक प्रक्रिया होगी।

मेडनिक का विचार है कि वह प्रोसेस द्वारा जो साहचर्य के तत्वों को आदर्शात्मक सातत्य में परिवर्तित करते है वे द्रुतगामी सृजनात्मक समाधान को प्रस्तुत करते है। तीन प्रकार के सृजनात्मक साहचर्य होते है — (1) निरभ्रता (Serenti-pity), समानता (Similarity) तथा मध्यस्थता (Mediation)

इसके अनेक पक्ष है जहाँ पर वैयक्तिक भेद प्रकट होते है और उनमें सातत्यता की खोज करनी पड़ती है जैसे — साहचर्य की आवश्यकता, साहचर्य का उच्चोच्चक्रम, साहचर्य की संख्या, ज्ञानात्मक या व्यक्तिगत शैली तथा सर्जनात्मकता संगठन का चयन आदि।

मेडनिक के विचार को अन्वीक्षा तथा विभ्रम (Trial and error) का उत्तम अभिव्यक्ति कहा गया है।

कैम्पबेल (Campbell) ने भी इसी स्थिति को स्वीकार किया है। उसके अनुसार सर्जनात्मकता में दो बात निहित होती है —

(1) अन्ध रूपान्तरण (Blind Variation)
(2) चयनित अवधारण (Selective retention)

पहले में समाधान से सम्बन्धित भिन्नता होती है और दूसरे में एकार्यात्मक स्थिति में आन्तरिक भिन्नता होती है। जब अन्ध रूपान्तरण एक विचार को प्रयास में ढालता है तब चयनित मापदण्ड प्रकट होता है और सर्जनात्मकता अस्तित्व में आती है।

3 — पूर्णाकार या अन्तर्दृष्टिवाद
(Gestalt Theory)

वर्दीमर ने सृजनात्मक चिन्तन तथा समस्या समाधान, उत्पादक चिन्तन, पारस्परिक तर्क और साहचर्य मत के लिये दोनों अभिगमों (Approaches)

पर विचार तथा उनकी आलोचना की। उसका कथन है कि मनोविश्लेषणात्मकता तथा साहचर्यवाद, दोनों ही घटनों के साथ न्याय नहीं कर सकते है इसलिए उसने पूर्णाकार या अन्तर्दृष्टि के मत को अवबोध की अभिवृद्धि करने, पुनर्गठित करने एवं चिंतन की प्रक्रिया की खोज करने हेतु प्रस्तावित किया है। उसने सृजनात्मक चिन्तन की प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार किया है- क्षेत्र का तार्किक बिन्दु केन्द्रीय हो जाता है परन्तु वह पृथक नहीं होता यह क्षेत्र मे संघटन रूप धारण कर लेता है, अर्थ मे परिवर्तन हो जाता है। संगठन तथा समूहीकरण उसे स्पष्ट हो जाते है।

4- अस्तित्ववाद (Existentialism)

आस्तिवाद वैचारिक रूप से पूर्णाकार के अधिक निकट है। आस्तिवाद सम्पूर्ण